नाम - डॉ. प्रदीप कुमार राय
विषय - राजनीति-शास्त्र
वर्ग - बी.ए.(प्रतिष्ठा), पार्ट - 02
सत्र - 2019-20
पेपर - 04
अध्याय - 17(2)
नाम - डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसोसियेट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग
रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम
दिनांक 09.05.2020

टॉपिक - भारतीय विदेश नीति के निर्माणक तत्व -

विश्व मानचित्र के पटल पर अपने भौगोलिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक एवं सामरिक दृष्टि से भारत अति महत्त्वपूर्ण स्थान का अधिकारी है। इसी दृष्टि से भारतीय विदेशनीति के निर्माण में कतिपय ऐसे तत्वों का योगदान एवं भूमिका है जिसे हम निम्न रूपों में अभिव्यक्त कर सकते हैं -

(1.) भौगोलिक तत्व - वैदेशिक नीति में भूगोल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत का भौगोलिक आकार, सामुद्रिक स्थिति, पर्वतीय परिवेश आदि ने उसे साम्यवादी एवं पश्चिमी देशों के साथ अनुकूल एवं तटस्थ संबंध बनाये रखने की अवस्था प्रदान की। स्वतंत्र एवं शांति का क्षेत्र हिंदमहासागर के लिये, सैन्य अड्डों का विरोध, सोवियत

हस्तक्षेप या विरोध, क्षेत्रीय गठबंधन एवं आर्थिक सम स्रोत भौगोलिक तत्व से प्रभावित बताये जा सकते हैं।

(2.) गुट बंदियां— स्वतंत्रता प्राप्ति के समय विश्व में अमेरिका एवं सो.संघ की अगुआई में दो गुटों में विभाजित थी। भारत ने अपना हित देखते हुये दोनों गुटों से पृथक दूरी बनाये रखने में भलाई समझा ताकि दोनों से लाभ मिल सके एवं विश्व में तनाव भी कम सके। कालांतर में यह असंलग्नता की नीति के रूप में विकसित हुई।

(3.) विचारधाराओं का प्रभाव— भारतीय विदेश नीति के निर्धारण में शांति और अहिंसा पर आधारित गांधीवादी विचारधारा, बुद्ध और सम्राट अशोक द्वारा प्रचारित अहिंसा की संकल्पना तथा सहिष्णुता की भावना का प्रभाव पड़ा है। इसी प्रकार मानवतावादी विचारकों यथा, अरविंद, टैगोर, एम.एन.राय आदि के विचार भी प्रभावकारी रहे हैं।

(4.) आर्थिक तत्व— स्वतंत्रता काल के बाद भारत की आर्थिक अवस्था के हित की दृष्टि से अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं स्थिरता की आवश्यकता ज्यादा प्रासंगिक थी। अधिकाधिक आर्थिक एवं तकनीकी सहायता की दृष्टि से बैदेशिक सहयोग

Scanned with CamScanner

...श्यक था इस हेतु सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण
...ध आवश्यक था। इससे सुरक्षा, विदेशी
...ायता एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार लाभदायक रहा।

... सैनिक तत्व- सैन्य दृष्टि से भारत
अपनी रक्षा एवं उपकरणों की खातिर विदेशों पर
निर्भर था। उसकी तत्कालिक दुर्बल स्थिति में
यह आवश्यक था कि वह सभी महत्वपूर्ण
शक्तियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये रखे।
राष्ट्रमंडल की सदस्यता के पीछे भारत की
ब्रिटेन पर सैन्य निर्भरता भी थी।

(शेष अगले भाग में)